क्या जगह है?





क्या जगह है?





डायन के पास थी एक बिल्ली
और एक हैट जो थी काली,
लंबे और नारंगी थे उसके बाल
लंबी चोटी थी पीठ पर लटक रही.
कैसे बिल्ली घुरघुराई
और कैसे डायन मुस्काई,
जैसे ही बैठे वह झाड़ू के डंडे पर
और उड़ चले हवाओं के भीतर.
लेकिन फिर कैसे डायन चिल्लाई
और बिल्ली ने ताली बजाई,
जब बड़ी तेज़ की आँधी आई
और डायन की हैट दूर उड़ाई.





“नीचे चलो,” डायन चीखी
और नीचे वह आ गए सब.
हैट को उन्होंने खोजा मिलकर
लेकिन हैट नहीं मिली कहीं पर





फिर कहीं झाड़ियों से
कूदता अपने तगड़े पंजों पर
वहाँ एक कुत्ता आया
जबड़ों में हैट था उसने दबाया.

बड़ी विनम्रता से उसने
रख दी हैट और कहा,
(जब डायन पहन रही थी अच्छे से
अपने सिर पर अपनी हैट)
“मैं हूँ कुत्ता उत्साही सबसे
क्या जगह है इस झाड़ू पर
मेरे जैसे कुत्ते के लिए?”



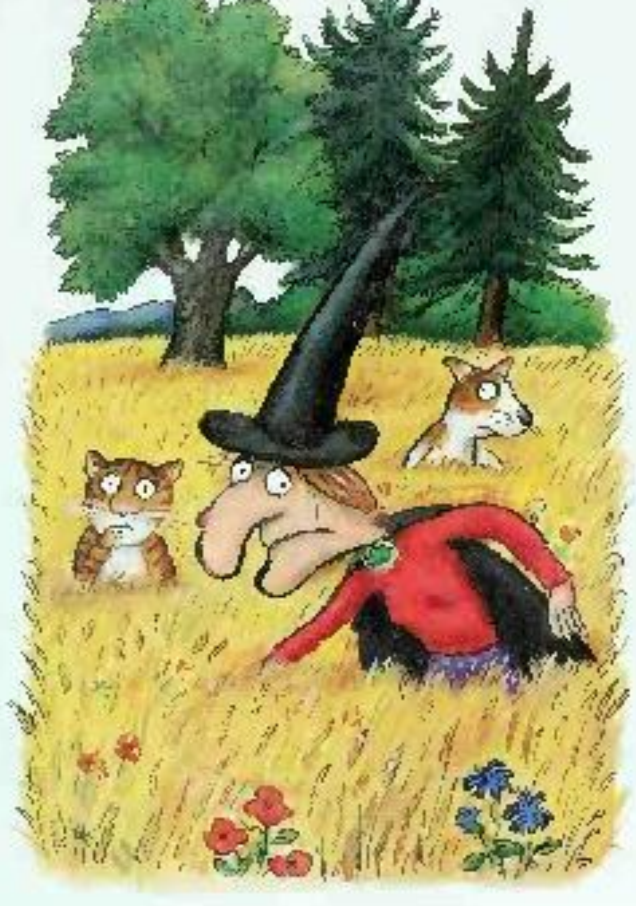


“हाँ!” डायन चिल्लाई
और कुत्ता चढ़ आया ऊपर.
डायन ने झाड़ू को थपथपाया और
वू...श! वह चल दिये ऊपर



उड़ते गए वह खेतों के
और घने जंगलों के ऊपर.
कुत्ते ने अपनी पूँछ हिलाई
और तभी तेज़ की आँधी आई.
डायन हँसी खूब ज़ोर से
और पकड़े रही हैट ज़ोर से.
लेकिन चोटी पर जो बंधा था रिबन
दूर उड़ गया वह फर्राटे से.





“नीचे चलो,” डायन चीखी
और वह आ गए सब नीचे.
रिबन को उन्होंने खोजा मिलकर
लेकिन रिबन नहीं मिला कहीं पर.

फिर एक पेड़ से आई
एक कर्णविदारक चीख,
एक हरा पक्षी वहाँ आया
और चोंच में पकड़े रिबन लाया.
बड़ी विनम्रता से रिबन दे कर
सिर अपना नीचे झुकाया.



फिर (जब डायन बाँध रही थी
बालों में रिबन) पक्षी बोला,
“मैं हूँ इक पक्षी
और मैं हूँ सबसे हरा.
क्या जगह है इस झाड़ पर
मेरे जैसे पक्षी के लिए ज़रा?”



“हाँ!” डायन चिल्लाई
और पक्षी भी चढ़ आया ऊपर.
डायन ने झाड़ को थपथपाया और
वू...श! वह चल दिये ऊपर.



उड़ चले वह सरकंडों के
और बहती नदियों के ऊपर.
पक्षी प्रसन्नता से चिल्लाया
जब तेज़ पवन का झोंका आया.
उड़ते गए वह आकाश में दूर
दूर, दूर, और भी दूर.
डायन ने रिबन को पकड़े रखा ज़ोर से
पर जादू की छड़ी छूट गई उसके हाथ से.



“नीचे चलो,” डायन चीखी
और वह आ गए सब नीचे.
छड़ी को उन्होंने खोजा मिलकर
लेकिन छड़ी नहीं मिली कहीं पर.

तभी तालाब से बाहर आया
एक अनोखा गीला मेंढक,
लगाई थी उसने कूद बड़ी
पकड़े हाथ में जादू की छड़ी.
छड़ी गिरा के डायन के पास
(जब डायन चोगे से
पोंछ रही थी छड़ी को)
बड़ी विनम्रता से वह बोला,
“मैं हूँ नन्हा मेंढक, मैं हूँ सबसे साफ
क्या जगह है इस झाड़ू पर
मेरे जैसे मेंढक के लिए भला?”
“हाँ!” डायन ने कहा और
कूद कर वह भी ऊपर आ चढ़ा.





डायन ने झाड़ू को थपथपाया और
वू...श! वह चल दिये ऊपर.
उड़ चले वह घाटियों के
और ऊँचे पर्वतों के ऊपर
खुशी में मेंढक लगा कूदने और.....







झाड़ू के हो गए टुकड़े दो!

बिल्ली, कुत्ता और गीला मेंढक
झट से गिर गए सब नीचे.
उलट-पलट कर वह तीनों
जा गिरे दलदल में नीचे.



डायन का आधा झाड़ू
उड़ चला बादलों में ऊपर
और सुनाई दी तब डायन को
एक गर्जन जो थी
बहुत ऊँची और भयंकर.....



“मैं हूँ एक ड्रैग्न, मुझ सा दुष्ट न कोई,
और तुम, डायन, लगती हो
उतनी स्वादिष्ट जितना है न कोई!”
“नहीं!” डायन चिल्लाई,
और उड़ती गई वह ऊपर और ऊपर.
ड्रैग्न उसके पीछे आया और
मुँह से आग उगलता रहा उस पर.
“मदद!” डायन चिल्लाई
और नीचे धरती पर वह आई.
उसने देखा चारों ओर
लेकिन कोई मदद न उसने पाई.



ड्रैग्न आ पहुँचा बहुत निकट
मुँह उसके से टपक रही थी लार.
वह बोला, “अब न छोड़ूँगा मैं तुमको
चकमा न दे पाओगी इस बार.”



पर जैसे ही उसने डायन को
लपक कर खाना चाहा,
एक भयानक जीव निकल कर
दलदल से बाहर आया.
वह था ऊँचा, काला, चिपचिपा
और ढका था परों और फर्र से.
उसके थे सिर चार डरावने
और दो पँख थे उसके पक्षी से.
और जब वह बोला तो
बोली थी उसकी बहुत भयंकर.
वह गुर्राया और चिल्लाया
फिर थोड़ा टर्राया और किकियाया.
जब वह दलदल से बाहर आया
मुँह से पानी और कीचड़ बहाया.
और उसने गरज कर ड्रैग्न से कहा,
“दूर हट!....
मैं खाऊँगा ...वह डायन है मेरी!”



डर कर ड्रैग्न खिसक गया पीछे
काँप रहा था वो बड़े ज़ोर से.
“मुझे क्षमा करें!” वह बुदबुदाया.
“बड़ी भूल हो गई है मुझ से
अच्छा लगा आप से मिल के
पर अब मुझे जाना है यहाँ से.”
और उसने अपने पँख फैलाए
दूर आकाश में उड़ता जाए.





तब नीचे आया उड़ कर पक्षी
और कूद कर आया मेंढक भी
बिल्ली भी झटपट नीचे आई
और कुत्ते की जान में जान आई.
और “धन्यवाद, ओह, धन्यवाद!”
कृतज्ञ डायन ने कहा चिल्लाकर.
“तुम सब की मदद न मिलती तो
होती मैं उस भयंकर ड्रैग्न के अंदर.”





फिर जादू की देगची को उसने भरा
और मुस्करा कर सबसे कहा,
“ले आओ तुम कुछ भी ढूँढ कर
और डाल दो देगची के अंदर!”
तो मेंढक ले आया इक लिली,
कोई फल ले आई उसकी बिल्ली,
पक्षी खोज लाया इक लकड़ी,
और कुत्ते को मिल गई हड्डी.



देगची में यह सब डाल दिया
और डायन ने उस को खूब हिलाया.
और उसे हिलाते और चलाते
डायन ने इक मंत्र गाया.
“इग्गटी, ज़िग्गटी, ज़ैग्गटी, ज़ू...म!”
और देगची से बाहर आया.......





एक शानदार,
आलीशान झाड़ू!

डायन के लिए थी उस पर एक सीट
और बिल्ली और कुत्ते
के लिए भी एक-एक
पक्षी के लिए था एक घोंसला और
गीले मेंढक के लिए तालाब एक.



"चलो!" डायन खुशी से चिल्लाई
और सब बैठ गए झाड़ू पर
डायन ने झाड़ू को थपथपाया और
वू...श! सब चल दिये आकाश में ऊपर.



